निर्गुट आंदोलन के पंद्रहवें सम्मेलन के अवसर पर प्रधानमंत्री का भाषण

15 जुलाई, 2009

सबसे पहले, मैं मिस्र और अरब देशों के प्रति भारत के लोगों की सुदृढ़ भाईचारे और एकता की भावना को व्यक्त करना चाहता हूं। मैं, महामहिम राष्ट्रपति महोदय श्री होस्नी मुबारक को निर्गुट आंदोलन की अध्यक्षता करने के लिए बधाई देता हूं। अध्यक्ष महोदय, हम जानते हैं कि आपकी गहरी सोच और मार्गदर्शन हमारे आंदोलन को प्रगति के पथ पर और आगे ले जाएगा। आपको, भारत की ओर से पूरा सहयोग मिलेगा।

मैं, क्यूबा के महामहिम राष्ट्रपति राउल कास्त्रों की भी तहे दिल से सराहना करता हूं जिन्होंने पिछले वर्षों में निर्गुट आंदोलन का कुशल नेतृत्व किया।

आज जब अरब की जमीन पर यह बैठक हो रही है तो मैं फिलीस्तीन की जनता के दुःख से अछूता कैसे रह सकता हूँ, जिन्होंने काफी कठिनाइयां और यातनाएं झेली हैं। हमारे आंदोलन में फिलीस्तीन की समस्या के व्यापक, न्यायपूर्ण, चिरस्थायी और शांतिपूर्ण समाधान के लिए और अधिक प्रयास किए जाने चाहिए।

निर्गुट आंदोलन में शामिल देश राष्ट्रपति टीटो, पंडित नेहरू, राष्ट्रपति नासिर जैसे इस आंदोलन के प्रवर्तकों की दूरदर्शी सोच के प्रति ही नहीं बल्कि राष्ट्रपति फिदेल कास्त्रो और श्रीमती इंदिरा गांधी जैसी उन महान हस्तियों के भी ऋणी हैं जिन्होंने इस दृष्टिकोण को आगे दिशा दी।

वर्ष 1961 में आयोजित प्रथम निर्गुट आंदोलन सम्मेलन में भारत के प्रथम प्रधानमंत्री एवं इस आंदोलन के प्रवर्तक पंडित जवाहर लाल नेहरू ने कहा था कि "....यहां इस सम्मेलन में एकत्र हुए राष्ट्रों की शक्ति न तो सैन्य शक्ति है और न ही आर्थिक शक्ति, फिर भी यह एक शक्ति है जिसे हम नैतिक शक्ति कह सकते हैं।"

ये शब्द आज भी सार्थक हैं। इतिहास गवाह है कि निर्गुट संकल्पना एक ऐसी संकल्पना है जो निरंतर विकसित होती है और धुंधली नहीं पड़ती। आज हमारे समक्ष जो चुनौतियां हैं उनका सामना करते हुए हमें इस आंदोलन को और आगे बढ़ाना चाहिए।

निर्गुट आंदोलन उपनिवेशी राष्ट्रों की राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए उनकी आवाज बना। इस आंदोलन से उनमें इस उम्मीद की किरण जगी थी कि उनकी राजनीतिक स्वतंत्रता से आर्थिक प्रगति होगी और उनकी निर्धनता, भुखमरी और बीमारी का निराकरण होगा। वे विश्व की व्यवस्था को नया

रूप प्रदान करने में सक्रिय और समान भागीदार बनेंगे जिससे विकासात्मक उद्देश्यों की पूर्ति में मदद मिलेगी। हम अभी इस उद्देश्य की पूर्ति से काफी दूर हैं।

आज ऐसी परिस्थितियों में निर्गुट सम्मेलन आयोजित किया गया है जब सारा विश्व भंयकर आर्थिक और वित्तीय संकट से जूझ रहा है।

जहां तक मुझे याद आता है यह संकट सबसे भयंकर है जो उन्नत औद्योगिक अर्थव्यवस्थाओं के कारण उत्पन्न हुआ परंतु इसका सबसे बुरा असर हमारे आंदोलन के सदस्य देशों की विकासशील अर्थव्यवस्थाओं पर पड़ा। विश्व मंदी के कारण विकसित देशों के बाजारों में संरक्षणवाद को मजबूती मिली, विकासशील देशों के निर्यात में भारी कमी आई और तीसरी दुनिया के देशों में ऋण और पूंजी का प्रवाह अवरुद्ध हो गया।

वैश्वीकरण के फायदे और ऋण भार में इतना अधिक अनुचित अनुपात है कि हमारी अर्थव्यवस्थाओं के लिए भी इस संकट से निपटना कठिन हो जाएगा। यदि इस संकट की घड़ी से सावधानीपूर्वक नहीं निपटा जाता है और अत्यधिक चल निधि (लिक्विडिटी) के कारण सौदेबाजी की गतिविधियां पुनः सक्रिय हो जाती हैं तो हमें लंबे समय तक मंदी के दौर से गुजरना पड़ सकता है।

विशेष रूप से विकासशील देशों में निरंतर मंदी का दौर बना रहने से हमारी जनता को निर्धनता की दयनीय स्थिति को झेलना पड़ेगा और पोषण, स्वास्थ्य व शिक्षा की दृष्टि से उनका स्तर और अधिक गिर जाएगा। हमने इतने कष्टों और बलिदानों के बाद जो प्रगति की है वह धूमिल हो जाएगी। हमारे इस सहस्राब्दि के विकासात्मक लक्ष्य मृग मरीचिका बनकर रह जाएंगे।

यह सुनिश्चित करने की दिशा में निर्गुट आंदोलन का काफी योगदान रहा है कि विश्व अर्थव्यवस्था में सुधार लाने के लिए किए गए सुनियोजित उपायों में विकासशील देशों की समस्याओं को ध्यान में रखा गया है। इनमें खाद्य सुरक्षा व ऊर्जा सुरक्षा, पर्यावरण और अंतरराष्ट्रीय स्तर की संस्थाओं में सुधार संबंधी चुनौतियों को शामिल किया गया है। ये सभी घटक आर्थिक संकट में अंतर्निहित हैं और इस स्थिति से व्यापक रूप से और तत्काल निपटना होगा। हमें नियम आधारित बहुपार्श्विक व्यापार प्रणाली और "दोहा राउंड " में हुए संतुलित और निष्पक्ष समझौते के समयपूर्व समापन से भारी जोखिम है।

अंतरराष्ट्रीय शासन तंत्र में न तो राष्ट्रों की बढ़ती परस्पर निर्भरता को और न ही समकालीन तथ्यों को ध्यान में रखा गया है। हालांकि हमारी सुव्यवस्थित अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था है लेकिन फिर भी अंतरराष्ट्रीय राजनीति विश्व की अधिकांश जनता की आशाओं, आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व नहीं करती। इसलिए निर्गुट आंदोलन की आज महती आवश्यकता है। हमारे सदस्य देश परस्पर सहयोग, व्यापार और निवेश करके विश्व अर्थव्यवस्था में सुधार लाने में काफी योगदान दे सकते हैं।

निर्णयन प्रक्रियाएं, चाहे संयुक्त राष्ट्र की हों या अंतरराष्ट्रीय वित्त संस्थाओं की, साठ वर्ष से भी अधिक अवधि पहले लिखे गए चार्टर के आधार पर जारी हैं जबकि तब से लेकर अब तक विश्व में काफी बदलाव आया है।

विकासशील देशों का अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की निर्णयन प्रक्रियाओं में पूर्ण प्रतिनिधित्व अवश्य होना चाहिए। यदि उन्हें प्रभावी रहना है और अपना औचित्य सिद्ध करना है तो उन्हें निरंतर एकीकृत विश्व में अपनी भूमिका निभाने की आवश्यकता है।

दो शताब्दियों से भी अधिक समय से औद्योगिक गतिविधियों और विकसित देशों की निरंतर बदलती जीवन शैली के परिणामस्वरूप ग्रीन हाउस गैसों के संचयन के कारण हमारी पृथ्वी को खतरा उत्पन्न हो गया है। जलवायु परिवर्तन की समस्या का कोई उचित समाधान करके इस महत्वपूर्ण दायित्व को पूरा करना चाहिए।

जलवायु परिवर्तन से विकासशील देश सबसे अधिक प्रभावित हुए हैं। जलवायु परिवर्तन की समस्या से निपटने की दिशा में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर किए गए प्रयासों की सफलता सुनिश्चित करने में इनका सर्वाधिक योगदान है। हम पर्यावरण के संरक्षण के प्रति अपना दायित्व दूसरे देशों की तुलना में अधिक समझते हैं। हम इस संबंध में पहले से अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं परंतु जलवायु परिवर्तन की समस्या से निपटने के लिए की जा रही कार्रवाई से विकासशील देशों की निर्धनता की समस्या चिरस्थायी नहीं होनी चाहिए।

इस वर्ष दिसंबर में होने वाले कोपेनहैगेन सम्मेलन में होने वाली बहुपक्षीय वार्ताओं से लेकर व्यापक, संतुलित और इनसे भी कहीं अधिक उचित (साम्यपूर्ण) परिणाम प्राप्त करने के लिए निर्गुट आंदोलन की महत्ता का प्रयोग किया जाना चाहिए।

अफ्रीका महाद्वीप में मानव जाति को दूसरे महाद्वीपों की तुलना में अधिक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। निर्गुट आंदोलन देशों को अफ्रीका की समस्याओं के साथ-साथ इसकी संभावनाओं को अंतरराष्ट्रीय विकास कार्यसूची में प्राथमिकता दिलाने का प्रयास करना चाहिए। अफ्रीका को अंतरराष्ट्रीय आर्थिक प्रक्रियाओं में सक्रिय भागीदार बनाना नैतिक अनिवार्यता है। इससे इसकी अर्थव्यवस्था पर भी अच्छा असर पड़ेगा।

भारत अफ्रीका के साथ व्यापक रूप से भागीदारी विकसित करने के लिए वचनबद्ध है। इस संबंध में पहल के रूप में हमने वर्ष 2008 में दिल्ली में भारत-अफ्रीका मंच (फोरम) सम्मेलन आयोजित किया था। हम उन क्षेत्रों में निर्गुट आंदोलन के अन्य सदस्य देशों के साथ अपनी भागीदारी बढ़ाने की दिशा में कार्य करने के लिए तैयार हैं जिनमें अफ्रीका को प्राथमिकता दी गई है।

अनेक सदस्य देशों की कुल जनसंख्या में एक बड़ा अनुपात युवा पीढ़ी का है। ये अपनी युवा पीढ़ी को दक्षता प्रदान कर सकते हैं और उन्हें उत्पादक जॉब दे सकते हैं तो विकासशील देश भावी अंतरराष्ट्रीय आर्थिक संवृद्धि का प्रमुख स्रोत बन सकते हैं। हमारे सामने विश्व की गरीब जनता को और अधिक कुशल एवं विश्वसनीय बनाने की चुनौती है। निर्गुट आंदोलन के सदस्य देश इस संबंध में पहल करके अग्रणी भूमिका निभा सकते हैं और भारत इसके पहल कार्य में भाग लेने के लिए तैयार है।

हमारी सदस्यता की विविधता हमारी सबसे बड़ी शक्ति है। हम एक दूसरे के विकास कार्यों, भिन्न सांस्कृतिक परंपराओं और राष्ट्रीय प्राथमिकताओं का सम्मान करते हैं। उग्रवाद, असहिष्णुता और आंतकवाद हमारे शत्रु हैं, वे हमें और हमारे आंदोलन को ध्वस्त करना चाहते हैं।

हाल के वर्षों में आंतकवादी समूह और अधिक सक्रिय, संगठित और दुस्साहसी हो गए हैं। आंतकवादियों और उन लोगों को, जो उन्हें सहायता देते हैं और उन्हें उकसाते हैं, न्याय प्रक्रिया के अंतर्गत लाना होगा। आंतकवाद के ढांचे को बिल्कुल ध्वस्त किया जाना चाहिए और उनके लिए कोई सुरक्षित आश्रय नहीं बचना चाहिए क्योंकि वे किसी हेतु, समूह या धर्म का प्रतिनिधित्व नही करते हैं। अब वह समय आ गया है कि हम अंतरराष्ट्रीय आंतकवाद पर व्यापक कन्वेंशन को सहमति दें।

निर्गुट आंदोलन विश्व को उस राजनीतिक और सैन्य शत्रुता से बचाने का प्रयास करने के लिए शुरू किया गया है जिससे इसके नष्ट होने का खतरा था। हमने उपनिवेशवाद के अन्याय और शीत युद्ध की हठधर्मिता के विरूद्ध संघर्ष किया। हमारे आंदोलन का विश्व में परस्पर सहयोग, शांति और स्थायित्व बनाए रखने में काफी योगदान रहा। हमने जब भी किसी बात के विरूद्ध आवाज उठाई, हमारी पहल का सम्मान किया गया।

समूचे विश्व में बदलाव आया है और अब चुनौतियां और अधिक जटिल हो गई हैं। पंडित नेहरू ने जिस नैतिक शक्ति की बात की थी वह शक्ति विचारों की शक्ति और न्याय और औचित्य के सिद्धांतों में पूर्ण आस्था से मिली थी। हम इस शक्ति का प्रयोग मानवजाति के सामूहिक हित के लिए कैसे कर सकते हैं, इस संबंध में निर्गुट आंदोलन के सदस्यों को अवश्य ही विचार करना चाहिए। अध्यक्ष महोदय, हम आपके नेतृत्व में दूरदर्शी सोच रखते हैं क्योंकि हम निर्गुट आंदोलन के प्रति समकालीन और अकाट्य दृष्टिकोण को नया रूप देना चाहते हैं।

धन्यवाद, अध्यक्ष महोदय।